6

प्रारंभिक स्तर पर शिक्षण की विधा के रूप में नुक्कड़ नाटक

*मेहराज अली**

साहित्य को समाज का प्रतिबिंब माना जाता है। एक ऐसा प्रतिबिंब जो मानव जीवन के सभी पहलुओं को चित्रित करता है। नाटक साहित्य की एक ऐसी विधा है, जो मानव जीवन की जीवंत अभिव्यक्ति प्रस्तुत करती है। देश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक क्षेत्रों में व्याप्त मानवीय जीवन की समस्याओं, विषमताओं, विसंगतियों और संघर्षों के विरुद्ध जिस कला माध्यम ने जन आंदोलनों को आधार बनाकर शोषित एवं पीड़ित जनता को एकजुट किया, वह है नुक्कड़ नाटक। 'नुक्कड़ नाटक' नाटक का एक लचीला फ़ॉर्म व शिल्प-विधान है। रंगमंचीय सजगता और सुलभता उच्च उपकरणों का प्रयोग,जनसाधारण के बीच से उभरते जीवंत पात्र, कुछ सीमित समय के अंतराल में किसी गंभीर समस्या का जनभाषा में उद्घाटन कर इसकी व्यावहारिकता, विश्वसनीयता, रोचकता और स्वाभाविकता का प्रमाण देते हैं। जनवादी कला का स्वरूप होने के कारण नुक्कड़ नाटक ने मुझे सदैव आकर्षित किया। अध्ययन के दौरान मुझे नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करने के कई अवसर प्राप्त हुए। इसे मैंने जनता को जनता से जोड़ने की कला के रूप में समझा है।

वर्तमान जीवन शैली की गतिशीलता ने मानव को आत्मकेंद्रित बना दिया है, जिसके फलस्वरूप वह अपने तक ही सीमित रह गया है। प्रायः देखा जाता है कि नुक्कड़ या चौक-चौराहा अपने भौगोलिक, सामाजिक एवं स्थानिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उसकी अपनी सांस्कृतिक परंपरा होती है। सूचना, उपदेश, चेतना, अनशन, हड़ताल आदि उस स्थान विशेष (नुक्कड़) को ऐतिहासिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक अर्थ प्रदान करते हैं। नुक्कड़ या चौक वैसे तो किसी मोहल्ले या बस्ती की गली के कोने को कह दिया जाता है, पर नुक्कड़ सिर्फ़ एक भौगोलिक स्थान मात्र नहीं है। "चौक-चौराहा एक ऐसा स्थान है, जहाँ समाज का हर वर्ग उपस्थित होता है। यह वह जगह है जहाँ पर आम आदमी, जैसे मज़दूर, किसान, शिक्षक, दफ़्तर का बाबू, दुकानदार, बेरोज़गार नवयुवक, मेहनतकश औरतें, रिक्शे-ठेले वाले जैसे श्रमशील लोग एक दूसरे से मिलते हैं, अपना दुःख-सुख साझा करते हुए समय और समाज के प्रतिकूल परिस्थितियों से अपनी अनुकूल जिजीविषा के साथ संघर्ष करते हैं।"[1] इन्हीं के बीच उत्पन्न होता है नुक्कड़ नाटक। एक ऐसा नाटक जिसके लिए किसी

*E-262/H-208, शादीपुर, नयी दिल्ली 110008

[1]प्रज्ञा-नुक्कड़ नाटक—रचना और प्रस्तुति, पृ. 10

विशेष प्रकार के दर्शक की आवश्यकता नहीं होती। वह सबका है। इसलिए नाटक का यह रूप जब देश की आम जनता के साथ जुड़ा तो नाटक वह नहीं रहा, जो वह था।

नुक्कड़ नाटकों का महत्व

नुक्कड़ नाटक आज समाज का सबसे सशक्त हथियार बन गया है। क्योंकि यह वर्तमान को बेहतर तरीके से प्रस्तुत कर पाने में सक्षम है। नुक्कड़ नाटकों ने उस समय जन्म लिया, जब देश में अशांति का माहौल था। समाज में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आदि विषमताएँ व्याप्त थीं। भारतीय जन इनसे रूबरू था, लेकिन उसमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह इनका वैयक्तिक रूप से सामना कर सके। नुक्कड़ नाटकों ने उन्हें एकजुट किया, उन्हें स्थिति से अवगत कराया, हल प्रस्तुत किया, उन्हें प्रोत्साहित किया और यथा स्थिति से लड़ने के लिए तैयार किया।

नाटक का यह नया रूप अपने पारंपरिक ढंग से काफ़ी नया है। यह एक ऐसी विधा है जो नाटक होते हुए भी उसकी सीमाओं को तोड़ती है। इस नाटक का

मंच चार दीवार में बंद कुछ गिने-चुने दर्शकों के समक्ष उपस्थित, रूप-सज्जा, कथ्य और अभिनय से सम्पन्न मंच नहीं है। इस नाटक ने देश के हर स्थल – गली, मोहल्ले, चौक, सड़क के किनारे, पार्क, विद्यालय, महाविद्यालय के प्रांगण, दफ़्तर के अहाते से लेकर कारखाने के दरवाज़े तक सभी को अपना नाट्य मंच बना लिया है। "इसमें देश के राजनीतिक भ्रष्टाचार के प्रति गुस्सा था। रूढ़ सामाजिक परंपराओं और कुरीतियों पर प्रहार था। सांप्रदायिकता का ज़हर फैलाने वाले पंडे-पुरोहितों, मुल्ला-मौलवियों का उपहास था। रोटी, कपड़ा, मकान और पानी, बिजली की किल्लत जैसी समस्याओं के विरोध में उठा आक्रोश था। इसलिए यह नाटक वहाँ-वहाँ गया जहाँ नुक्कड़ था।"

भारत में नुक्कड़ नाटकों का आविर्भाव उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष में जनजागरण को खींच लाने के इप्टा के अभियान के माध्यम के रूप में हुआ। स्वतंत्रता के बाद का दिन-ब-दिन उग्रतर होता हुआ भारतीय परिवेश और मूल्य संक्रमण, वर्ग संघर्ष, शोषण के बीच उभरा तनाव आदि समान रूप से नुक्कड़ नाटक के मूल में निहित रहे हैं। जब साहित्य-रूपी दर्पण में समाज का चेहरा प्रतिबिंबित होने लगता है तो उसे जन-जन तक पहुँचाने के लिए सांस्कृतिक औज़ार की आवश्यकता होती है। नुक्कड़ नाटक उसी औज़ार के रूप में प्रकट हुआ। नुक्कड़ नाटकों ने लोक नाट्य परंपरा से जुड़ते हुए भी परंपरा को समयानुसार नया आयाम और नया संदर्भ प्रदान किया है। आज का नुक्कड़ नाटक प्राचीन लोक नाट्य परंपरा से स्वतंत्र, नवीन अस्तित्व के साथ सामने आया है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 35 5/26/2017 9:26:56 AM

नुक्कड़ नाटक की विशेषताएँ

नुक्कड़ नाटक मूल रूप से जीवन की विषमताओं, विडंबनाओं, विसंगतियों और विद्रूपताओं को चित्रित करता है। अपने रोज़मर्रा के जीवन में जिन समस्याओं से आम आदमी का सामना होता है, उन पर चिंतन की क्षमता पैदा करना नुक्कड़ नाटक की मूल विशेषता है। तात्कालिकता इस विधा की पहली शर्त है। कोई भी घटना या समस्या, जो वर्तमान को कुरेद रही हो, जैसे— देश विभाजन, भूख, शोषण, घूसखोरी, आदि इसे काम्य हैं। इसके अतिरिक्त उसके विषय का चुनाव करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि सदैव ही वह उदासीनता या गतानुगिकता से बचा रहे। इसलिए कथ्य एवं शिल्प, दोनों स्तरों पर उसमें एक खानगी होती है, फ़ैलाव नहीं होता, एक समसामयिक धारा प्रवाह क्षिप्रता के साथ विषय, फ़ॉर्म, पात्र, और दर्शक उद्देश्य की ओर बह चलते हैं।

आज समय बदल रहा है। व्यक्ति आज आत्मकेंद्रित होकर अपने समाज से कट गया है। भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद के बढ़ते प्रभाव से जहाँ तकनीक के अधिक प्रयोग ने अभिव्यक्ति के माध्यमों को बदल दिया है, वहीं मनुष्य जीवन को भी यंत्रीकृत कर दिया है। व्यावसायिकता के दौर में नुक्कड़ नाटक जैसी जनपक्षीय कला का वर्चस्व भी जनता के बीच कम होता जा रहा है। समाज में नुक्कड़ नाटक के प्रति बढ़ती उदासीनता और व्यावसायिक दृष्टि ने नाटककारों और रंगकर्मियों में भी इसके प्रति अरुचि पैदा कर दी है।

शिक्षा में नुक्कड़ नाटकों की उपयोगिता

नुक्कड़ नाटक का जन्म राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में हुआ किंतु आज यह प्रत्येक क्षेत्र के लिए प्रासंगिक हो गया है। शिक्षा के क्षेत्र में नुक्कड़ नाटक की अहम भूमिका रही है। आज देश ग्लोबल हो रहा है, ऐसे में देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा जो गाँवों में बसता है, वह इस ग्लोबल विश्व से अपरिचित है और यह परिचय केवल शिक्षा के माध्यम से ही संभव है। साहित्य की अन्य विधाओं, जैसे— उपन्यास तथा कहानी में किसी काल्पनिक या यथार्थ कथा का चित्रण व्यक्ति को विचलित कर सकते हैं, उनमें देश व समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना की ज्योति जला सकते हैं, किन्तु यदि वही कथा उन्हें प्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत कर दी जाए तो इसका प्रभाव अधिक व शीघ्र होता है। नाटकों ने सदैव ही समाज को उसकी वास्तविक स्थिति से अवगत भी कराया है और समस्या का समाधान भी प्रस्तुत किया है।

विद्यालयों में आयोजित नुक्कड़ नाटक – कुछ उदाहरण

आज देश के अधिकतर विद्यालयों में नुक्कड़ नाटक का प्रयोग भिन्न-भिन्न विषयों से संबंधित सामाजिक विद्रूपताओं और समस्याओं को उजागर करने और

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 36 5/26/2017 9:26:57 AM

विद्यार्थियों के माध्यम से इनके सुझाव प्रस्तुत करने के प्रयास के रूप में किए जा रहे हैं। इससे संबंधित कुछ विद्यालयों के उदाहरण प्रस्तुत हैं, जिन्होंने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने, किसी क्षेत्र विशेष की समस्या को उजागर करने तथा विद्यालयों में बच्चों का नामांकन बढ़ाने और उन्हें शिक्षा का महत्व बताने का कार्य किया है—

- सोनुवा गोलमुंडा पंचायत के अंतर्गत उत्कृष्ट प्राथमिक विद्यालय टोपोटोला नियमित रूप से शिक्षा का अधिकार अधिनियम–2009 के तहत कला जत्था द्वारा नुक्कड़ नाटक का मंचन करता रहा है। इसमें कलाकारों के माध्यम से बच्चों को शिक्षित करने के लिए विद्यालय भेजने, जो माता-पिता अपने बच्चों को विद्यालय जाने से रोकते हैं, उन पर सरकार द्वारा की जाने वाली कार्रवाई एवं विद्यालय में बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा सहित नि:शुल्क भोजन, कपड़ा, किताब, पेंसिल, साइकिल समेत अन्य सामान दिए जाने के बारे में जानकारी के साथ-साथ शिक्षा द्वारा होने वाले लाभ से भी अवगत कराया जाता है।
- जबलपुर (मध्यप्रदेश) के बिलाबांग हाई इंटरनेशनल स्कूल का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करना है। इसी उद्देश्य के तहत विद्यालय के छात्रों ने साउथ एवेन्यू मॉल में भ्रष्टाचार समस्या पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत कर लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया। कक्षा छह व सात के इस सम्मिलित प्रयास ने दर्शकों की वाह-वाही बटोरी। भ्रष्टाचार की जड़ किस प्रकार पूरे विश्व को धीरे-धीरे खोखला करती जा रही है, इसका समूल उन्मूलन अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत विषय को छात्रों ने अत्यंत सरल व सहज ढंग से दर्शकों के समक्ष रखा। छात्र निश्चय ही अपने उद्देश्य में सफ़ल रहे और तालियों की गडग़ड़ाहट से पूरा मॉल गूँज उठा। विद्यालय ने यह संकल्प लिया कि भविष्य में भी इसी तरह की ज्वलंत समस्याओं के समाधान हेतु इसी प्रकार के नुक्कड़ नाटकों की प्रस्तुति का आयोजन किया जाएगा।
- मानव समाज सेवा सभा, हिलसा (नालंदा बिहार) द्वारा गुटखा छोड़ो आंदोलन चलाया जा रहा है। इसके तहत युवा कार्यकर्ताओं ने और लोक समिति के सहयोग से लॉर्ड कृष्णा उच्च विद्यालय, अमृतनगर उच्च विद्यालय एवं ओरिया के आदर्श राजकीय मध्य विद्यालय में गुटखा, शराब समेत अन्य बुरी आदतों के खिलाफ़ संकल्प लेने का अभियान चलाया। इस अभियान को सफ़ल बनाने हेतु भिन्न-भिन्न स्थलों पर नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया।
- ओरिया विद्यालय (राँची) में प्रधानाचार्य तथा अन्य शिक्षकों ने नशामुक्ति संकल्प रथ का स्वागत किया। विद्यालय के छात्रों ने नशा मुक्ति विषय से संबंधित नुक्कड़ नाटक का आयोजन कर लोगों तक अपना संदेश पहुँचाया तथा छात्र-छात्राओं ने जनता से नशाखोरी के खिलाफ़ आवाज़ उठाने का आग्रह किया ताकि एक बेहतर समाज का निर्माण हो सके।
- हजारीबाग के नवाबगंज स्कूल में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा साथ ही नुक्कड़ नाटक के माध्यम से बरसात में मच्छरों

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 37 5/26/2017 9:26:57 AM

से उत्पन्न होने वाली बीमारियों से भी बच्चों को अवगत कराया गया और बचाव के तरीके बच्चों को बताए गए। डेंगू से बचने का उपाय भी बच्चों को बताया गया। बेहतर प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

- श्री कंवरतारा विद्यालय में प्री-प्राइमरी के बच्चों ने ग्रीन डे मनाया। प्री-प्राइमरी सेक्शन में फल, सब्ज़ियों व वस्तुओं की प्रदर्शनी लगाई गई। मोगली उत्सव मनाया गया। कक्षा एक व दो के बच्चों ने विद्यालय परिसर में पौधारोपण किया। कक्षा तीन से पाँच के बच्चों ने श्रीनगर कॉलोनी में रैली निकालकर पौधारोपण कर 'क्लीन इंडिया-ग्रीन इंडिया' का संदेश दिया। विद्यालय के सीनियर विद्यार्थियों ने अंबेडकर चौराहे से शासन अस्पताल होते हुए घंटाघर व बस स्टैंड तक रैली निकाली। बाल श्रम के विरोध में विद्यार्थियों ने हिंदी व अंग्रेज़ी में नुक्कड़ नाटक का मंचन किया। नागरिकों से बाल श्रम रोकने का संकल्प दिलाया।
- करही के ग्लोबल कॉन्सेप्ट स्कूल में पौधारोपण किया गया। प्राइमरी ब्लॉक के बच्चों ने रैली निकालकर नुक्कड़ नाटक किया।
- ज़िला एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के तहत राजकीय महिला महाविद्यालय के परिसर में विश्व एड्स दिवस के अवसर पर जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। नुक्कड़ नाटक में पाँच टीमों ने भाग लिया। टीमों ने नुक्कड़ नाटक के माध्यम से छात्राओं को एड्स के प्रति जागरूक किया।

नुक्कड़ नाटक ने समाज में एक विशेष स्थान ग्रहण किया है। शिक्षा संस्थानों, विद्यालयों, महाविद्यालयों में नुक्कड़ नाटक कला के एक विशेष साधन के रूप में प्रयोग में लाए जाते हैं। यथा—स्थिति से लड़ने और समाज में व्याप्त कुरीतियों से जनता को अवगत कराने में नुक्कड़ नाटक ने एक विशेष भूमिका निभाई है। विद्यार्थियों में इसके प्रति रुचि बढ़ाने हेतु शिक्षा संस्थानों में नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। विद्यार्थी इनमें भाग लेते हैं और भिन्न-भिन्न विषयों पर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करते हैं।

निष्कर्ष

नुक्कड़ नाटक ने समाज की स्थिति को जिस प्रकार समाज के समक्ष प्रस्तुत किया वह एक आधुनिक एवं क्रांतिकारी प्रयास था। नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से समाज में जागरूकता का संदेश पहुँचा। लोगों ने अपने आस-पास घट रही सामाजिक घटनाओं को एवं उसके अमानवीय रूप को पहचानना प्रारंभ किया। विद्यालयों में इसके प्रयोग ने विद्यार्थियों में एक नयी ऊर्जा का संचार किया। स्कूल, कॉलेज, और अन्य शिक्षा संस्थानों ने अपने-अपने स्तर पर इसका प्रयोग किया और इसके महत्व को पहचाना है। एक ओर इसके विषयगत प्रदर्शन ने समाज को वर्तमान स्थिति से रूबरू किया है, तो दूसरी ओर इसने विद्यार्थियों में आत्मशक्ति व आत्मविश्वास का संचार भी किया है। शिक्षा की एक पद्धति "खेल-खेल में सीखना" का यह एक अच्छा उदाहरण है। विद्यालयों में विद्यार्थी इसके माध्यम से समूह में

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 38 5/26/2017 9:26:57 AM

रह कर एक-दूसरे के साथ सहयोग की भावना से परिचित होते हैं। उनमें एकजुट होकर कार्य करने की भावना का विकास होता है।

आज इस विधा को हमें उसी नज़रिये से देखने की ज़रूरत है, जिस नज़र से सफ़दर हाशमी और उनके सहयोगियों ने देखा था। इसका महत्व व्यापक है और जब तक समाज में कुरीतियाँ पनपती रहेंगी, नुक्कड़ नाटक तब तक समाज को उसके छिपे चेहरे से रूबरू कराता रहेगा, ज़रूरत है तो बस इस विधा के प्रति ईमानदार रहने की।

संदर्भ

चंद्रेश. 2006. *नुक्कड़ नाटक*. राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली.

जन नाट्य मंच. *चौक-चौक पर गली-गली में*. भाग-1. दिल्ली.

___. *चौक-चौक पर गली-गली में*. भाग 2. दिल्ली.

जैन, नेमिचन्द्र. 1996. *रंग परंपरा*. द्वितीय संस्करण. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.

तनेजा,जयदेव. 1980. *हिंदी रंगकर्म दशा और दिशा*. तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली.

प्रज्ञा (संपादक). 2008. *जनता के बीच जनता की बात (नुक्कड़ नाटक संग्रह)*. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.

___. 2006. *नुक्कड़ नाटक— रचना और प्रस्तुति*. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नयी दिल्ली.

माथुर, जगदीशचन्द्र. 2006. *परंपराशील नाट्य*. राजकमल प्रकाशन, दिल्ली.

ज्ञानमंडल काशी.1948. *हिन्दी साहित्यकोश*. उत्तर प्रदेश.

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 39 5/26/2017 9:26:57 AM